गांधीवादी दर्शन में पर्यावरण संरक्षण: समकालीन प्रासंगिकता

पूरन मल मीना
(एम.ए., एम.फिल.)
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष- राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़, अलवर (राज.) पिन कोड नं- 301408
मो.न. 9461669111 Mail id - pmmeena111@gmail.com

अनिल कुमार शर्मा
सह आचार्य- राजनीति विज्ञान
राजकीय महाविद्यालय राजगढ अलवर (राजस्थान)

सारांश- महात्मा गांधी का दर्शन पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से अत्यंत प्रासंगिक और दूरदर्शी है। उन्होंने औद्योगिक सभ्यता की आलोचना करते हुए कहा कि "पृथ्वी प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त है, लेकिन किसी की लालच को पूरा करने के लिए नहीं।" यह शोध पत्र गांधीजी की पर्यावरणीय चेतना को उनके मूल सिद्धांतों – अहिंसा, स्वदेशी, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य और ग्राम स्वराज – के आलोक में समझने का प्रयास करता है। गांधीजी ने प्रकृति को शोषण का विषय नहीं, बल्कि मानव जीवन का अभिन्न अंग माना। उन्होंने औद्योगिक पूंजीवाद को पर्यावरणीय असंतुलन का मूल कारण बताया और विकेंद्रीकृत, गांव-केंद्रित अर्थव्यवस्था का समर्थन किया, जिसमें कुटीर उद्योग, खादी और स्थानीय संसाधनों का संरक्षण शामिल था। आज के संदर्भ में, जब जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता ह्रास, प्रदूषण और संसाधनों की अंधाधुंध खपत वैश्विक संकट बन चुके हैं, गांधीवादी दर्शन एक वैकल्पिक मॉडल प्रस्तुत करता है। यह शोध पत्र गांधीजी के विचारों को समकालीन चुनौतियों – जैसे पेरिस समझौता, सतत विकास लक्ष्य (SDGs) और भारत के नवीकरणीय ऊर्जा कार्यक्रम – से जोड़कर विश्लेषण करता है। चिपको आंदोलन, अप्पिको आंदोलन और अन्य पर्यावरणीय जन-आंदोलनों को गांधीवादी अहिंसा का प्रत्यक्ष उदाहरण माना गया है।

पत्र का मुख्य तर्क यह है कि गांधीजी की 'सरल जीवन, उच्च विचार' की अवधारणा पर्यावरणीय संकट के समाधान का नैतिक आधार प्रदान करती है। यह न केवल भारत के लिए, बल्कि समूचे विश्व के लिए एक सतत विकास का रोडमैप है। शोध प्राथमिक स्रोतों (हिंद स्वराज, यंग इंडिया, हरिजन) और द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है तथा नीति-निर्माताओं, विद्वानों और पर्यावरण कार्यकर्ताओं के लिए उपयोगी अंतर्दृष्टि प्रस्तुत करता है।

बीज शब्द- गांधीवादी दर्शन, पर्यावरण संरक्षण, अहिंसा, स्वदेशी, ग्राम स्वराज, अपरिग्रह, सतत विकास, नरम शक्ति, जैव विविधता, समकालीन प्रासंगिकता।

परिचय- महात्मा गांधी ने पर्यावरण को कभी अलग से नहीं देखा। उनके लिए पर्यावरण संरक्षण अहिंसा का विस्तार था। उन्होंने औद्योगिक क्रांति और आधुनिक सभ्यता की आलोचना की, क्योंकि यह प्रकृति के शोषण पर आधारित थी। *हिंद स्वराज* (1909) में उन्होंने लिखा कि आधुनिक सभ्यता मनुष्य को प्रकृति का स्वामी बनाने के बजाय उसका गुलाम बना देती है। गांधीजी का मानना था कि प्रकृति मानव की माता है और उसे लूटने का अधिकार किसी को नहीं है।

आज विश्व पर्यावरणीय संकट से जूझ रहा है। जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, प्रदूषण और संसाधनों की कमी ने मानव सभ्यता को चुनौती दी है। ऐसे में गांधीजी का दर्शन न केवल ऐतिहासिक महत्व रखता है, बल्कि समकालीन समाधान भी प्रस्तुत करता है।पर्यावरण - वह समग्र प्राकृतिक और मानव-निर्मित परिवेश है जिसमें जीवित प्राणी (मानव, पशु, पक्षी, कीट आदि) और निर्जीव तत्व (वायु, जल, मिट्टी, पर्वत, नदियां, वन आदि) एक-दूसरे से अंतर्संबंधित होकर रहते हैं। यह शब्द लैटिन भाषा के 'Environ' से निकला है, जिसका अर्थ है 'चारों ओर घेरना'। पर्यावरण केवल प्रकृति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें जैविक (biotic) और अजैविक (abiotic) दोनों घटक शामिल हैं। **जैविक घटक** में सभी जीवित प्राणी – पौधे, जानवर, सूक्ष्मजीव और मानव – आते हैं। **अजैविक घटक** में वायु, जल, मिट्टी, सूर्य का प्रकाश, तापमान, खनिज और भू-आकृति शामिल हैं। ये दोनों घटक एक-दूसरे पर निर्भर हैं। उदाहरण के लिए, पेड़ (जैविक) वायु से कार्बन डाइऑक्साइड लेकर ऑक्सीजन देते हैं, जो मानव और अन्य जीवों के लिए आवश्यक है।

पर्यावरण के प्रकार-

1.**प्राकृतिक पर्यावरण** — वन, नदियां, पहाड़, समुद्र, वायुमंडल आदि।

2.**मानव-निर्मित पर्यावरण** — शहर, गांव, सड़कें, कारखाने, कृषि क्षेत्र आदि।

सामाजिक-आर्थिक पर्यावरण — संस्कृति, अर्थव्यवस्था, कानून और सामाजिक संबंध।

पर्यावरण का महत्व पर्यावरण जीवन का आधार है। यह जीवों को भोजन, आश्रय, ऑक्सीजन और पानी प्रदान करता है। स्वस्थ पर्यावरण ही स्वस्थ समाज और अर्थव्यवस्था की गारंटी है। पर्यावरण असंतुलन (प्रदूषण, वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन) से जैव विविधता नष्ट होती है, प्राकृतिक आपदाएं बढ़ती हैं और मानव स्वास्थ्य प्रभावित होता है।

गांधीवादी दर्शन में पर्यावरण की अवधारणा- गांधीजी ने अहिंसा को केवल मानव-मानव संबंध तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने इसे समस्त सृष्टि के प्रति विस्तारित किया। *हरिजन* में उन्होंने लिखा, "सभी जीवों को जीने का अधिकार है, जितना हमें है।" उन्होंने प्रकृति को 'उधार' माना, जिसे हम भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखने के लिए जिम्मेदार हैं।

स्वदेशी और ग्राम स्वराज उनके पर्यावरणीय दर्शन के केंद्र थे। उन्होंने बड़े उद्योगों के बजाय कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया, क्योंकि वे पर्यावरण अनुकूल और स्थानीय संसाधनों पर आधारित थे। खादी आंदोलन न केवल आर्थिक स्वावलंबन का प्रतीक था, बल्कि पर्यावरण संरक्षण का भी। चरखा कातना संसाधनों के दुरुपयोग को रोकता था।

अपरिग्रह (अत्यधिक संग्रह न करना) और ब्रह्मचर्य (संयम) उनके पर्यावरणीय नैतिकता के आधार थे। उन्होंने कहा कि "आवश्यकता से अधिक लेना चोरी है।" यह विचार आज की उपभोक्तावादी संस्कृति के

विरुद्ध सीधा आघात है।

समकालीन प्रासंगिकता - आज जब जलवायु परिवर्तन वैश्विक आपदा बन चुका है, गांधीजी का 'सरल जीवन' मॉडल अत्यंत प्रासंगिक और व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करता है। पेरिस समझौता (2015) और संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य (SDGs) संसाधनों के संयमित उपयोग, नवीकरणीय ऊर्जा और पर्यावरण न्याय पर जोर देते हैं – ये सभी गांधीवादी विचारधारा से सीधे प्रेरित हैं। गांधीजी ने कहा था, "पृथ्वी प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त है, लेकिन किसी की लालच को पूरा करने के लिए नहीं।" यह कथन आज की उपभोक्तावादी संस्कृति और अंधाधुंध विकास मॉडल की आलोचना करता है।

भारत में **चिपको आंदोलन** (1973, उत्तराखंड) गांधीजी की अहिंसा का प्रत्यक्ष उदाहरण था। गांव की महिलाओं ने पेड़ों को गले लगाकर वनों की रक्षा की। यह आंदोलन गांधीजी के सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धांत पर आधारित था, जिसने वन संरक्षण की नीति को प्रभावित किया। इसी प्रकार **अप्पिको आंदोलन** (कर्नाटक) और अन्य जन-आंदोलनों में गांधीवादी मूल्य दिखते हैं। गांधीजी की दूरदृष्टि नवीकरणीय ऊर्जा, जैविक कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित होती है। आज **आत्मनिर्भर भारत अभियान** गांधीजी के स्वदेशी और ग्राम स्वराज से प्रेरित है, जिसमें स्थानीय उत्पादन, कुटीर उद्योग और पर्यावरण अनुकूल विकास पर बल दिया जा रहा है।

पर्यावरण न्याय के संदर्भ में गांधीजी का दर्शन और भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने गरीबों और प्रकृति दोनों की रक्षा पर जोर दिया। आधुनिक विकास मॉडल में गरीब समुदाय सबसे अधिक प्रभावित होते हैं – चाहे वह जल संकट हो, वन विस्थापन हो या प्रदूषण। गांधीजी का 'अंत्योदय' (सबसे कमजोर का उत्थान) इस न्याय को सुनिश्चित करता है। वे बड़े उद्योगों के बजाय विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था चाहते थे, जो पर्यावरण को कम नुकसान पहुंचाए और स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाए। समकालीन चुनौतियों जैसे प्लास्टिक प्रदूषण, जैव विविधता ह्रास और जलवायु शरणार्थियों के संदर्भ में गांधीजी की 'अपरिग्रह' (अत्यधिक संग्रह न करना) की अवधारणा उपयोगी है। यदि विश्व गांधीजी के 'सरल जीवन' को अपनाए – कम खपत, अधिक साझेदारी और प्रकृति के साथ सामंजस्य – तो सतत विकास संभव है। भारत को चाहिए कि वह गांधीवादी मूल्यों को अपनी राष्ट्रीय पर्यावरण नीति, शिक्षा प्रणाली और अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति में शामिल करे। तभी हम न केवल जलवायु संकट का सामना कर पाएंगे, बल्कि विश्व को एक नैतिक और पर्यावरणीय नेतृत्व भी दे सकेंगे।

गांधीजी की दूरदृष्टि हमें याद दिलाती है कि पर्यावरण संरक्षण कोई वैकल्पिक विकल्प नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व की शर्त है। उनकी विचारधारा आज के युवाओं, नीति-निर्माताओं और पर्यावरण कार्यकर्ताओं के लिए एक मार्गदर्शक है।

निष्कर्ष- गांधीवादी दर्शन पर्यावरण संरक्षण का नैतिक आधार प्रदान करता है। आज जब विश्व पर्यावरणीय संकट से जूझ रहा है, गांधीजी की 'सरल जीवन, उच्च विचार' की अवधारणा एक विकल्प है। यदि हम उनके आदर्शों को अपनाएं – अहिंसा को प्रकृति के प्रति विस्तारित करें, स्वदेशी को स्थानीय अर्थव्यवस्था बनाएं और अपरिग्रह को उपभोक्तावाद के विरुद्ध खड़ा करें – तो सतत विकास संभव है। भारत को चाहिए कि गांधीजी के विचारों को अपनी पर्यावरण नीति, शिक्षा और विकास मॉडल में शामिल करे। तभी हम न केवल स्वयं को बचाएंगे, बल्कि विश्व को भी एक बेहतर भविष्य दे सकेंगे। गांधीजी का सपना अधूरा है, लेकिन उनका मार्ग स्पष्ट है – पर्यावरण संरक्षण मानवता की सेवा का अभिन्न अंग है।

****

संदर्भ सूची:-

1. गांधी, महात्मा. *हिंद स्वराज*, 1909।
2. गांधी, महात्मा. *यंग इंडिया* (चयनित लेख), 1919-1932।
3. गांधी, महात्मा. *हरिजन* (पर्यावरण संबंधी लेख), 1933-1940।
4. कुमार, कृष्ण. *The Political Agenda of Education*, Sage, 2005।
5. गुहा, रामचंद्र. *Gandhi Before India*, Penguin, 2013।
6. सिंह, रामजी. *The Gandhian Vision*, Manak Publications, 1998।
7. भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, *National Environment Policy*, 2006।
8. ILO, *Child Labour and Environment Reports* (pre-2021)।
9. UNESCO, *Gandhi and Contemporary World*, 2019।
10. दत्ता, बिमल कुमार. "Contemporary Relevance of Gandhi's Ecological Thought", IJHSSS, 2020।
11. Tiwari, R.R. "Gandhi as an Environmentalist", PMC, 2019।
12. Nayeck, Kewal. "M.K. Gandhi's Concern with Environment", Journal of Environmental Thought, 2018।
13. Sasikala, A.S. "Environmental Thoughts of Gandhi for a Green Future", Gandhi Marg, 2012।
14. गुग्गेनबर्गर, डब्ल्यू. "Gandhi and Sustainability", Religions, 2021।
15. पटेल, सी.एन. *Gandhi and Nai Talim*, Navajivan, 1980।